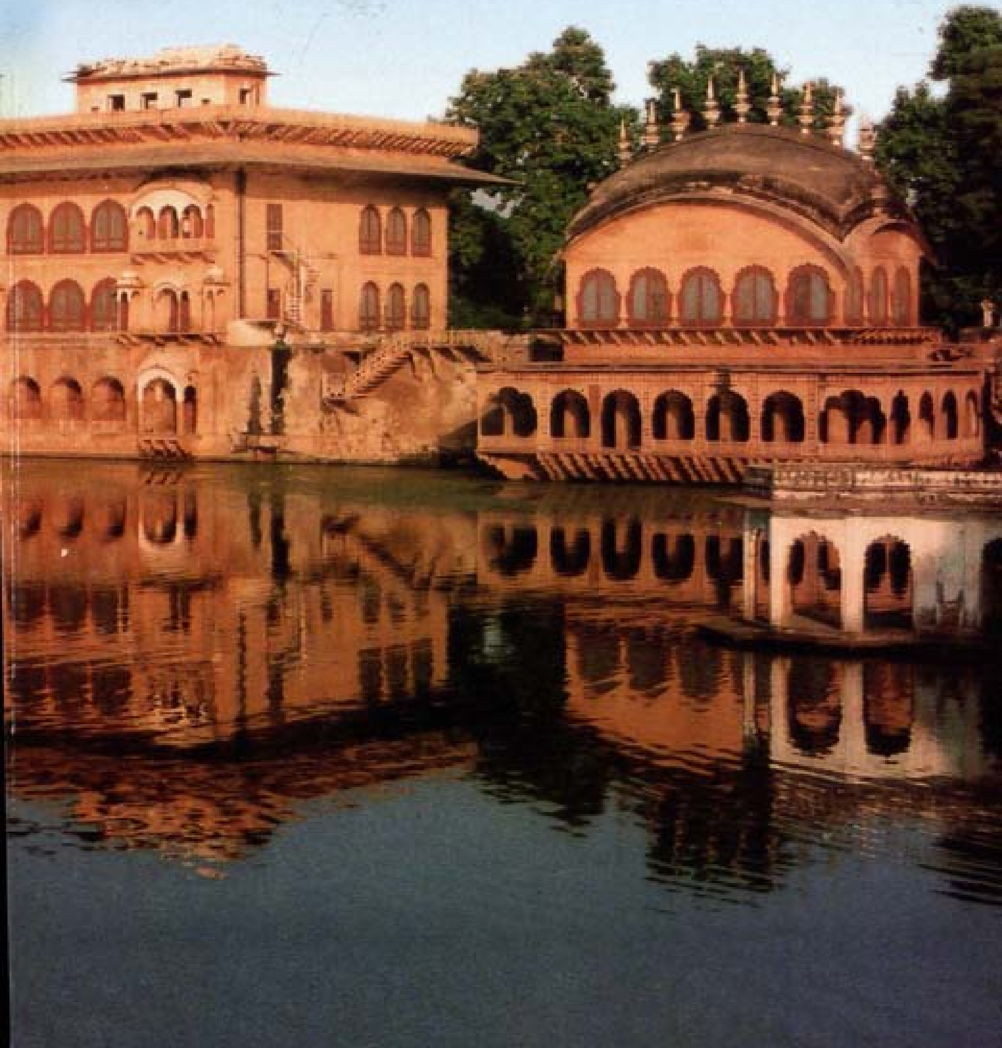
डीग



भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

डीग

लेखक

श्री मुनीश चन्द्र जोशी

अनुवाद एवं संवर्धन

शिव कुमार भगत

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

प्रकाशक

महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

जनपथ, नई दिल्ली

2006

प्रथम संस्करण 2006

मूल्य : रु० 20.00

मुद्रक : पैलिकन प्रेस, ए-45 नारायणा, फेज-II,
नई दिल्ली-110028

विषय-सूची

फलक-सूची

डीग

1. सामान्य सूचना

राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित डीग, यद्यपि अल्पज्ञात तथापि अपने सौन्दर्य तथा बाग व जल व्यवस्था के आनुपातिक संतुलन में स्थित महलों के कारण पर्यटन के दृष्टिकोण से एक सुरम्य स्थल है। भौगोलिक दृष्टि से जाट शासकों की शक्ति स्थली रही इस स्थान की अवस्थिति 25°25' उत्तरी अक्षांश तथा 77°15' पूर्वी देशान्तर है। ऐतिहासिक रूप से एक मध्य युगीन सा दिखने वाला यह अलसाया शहर अपनी महत्ता रखता है, और तद्नुसार जाटों के क्रमिक उत्कर्ष और उनकी एक कृषक-योद्धा समुदाय के रूप में पहचान स्थापित किये जाने की कहानी को संजोये रखा है।

दिल्ली से लगभग 153 किलोमीटर दक्षिण, आगरा से लगभग 98 किलोमिटर उत्तर-पश्चिम तथा भरतपुर से लगभग 34 किलोमीटर की दूरी पर स्थित डीग तक क्रमशः भाया-कोसी, मथुरा एवं भाया-भरतपुर होकर सड़क मार्ग द्वारा पहुँचा जा सकता है। ठहराव की व्यवस्था हेतु राजस्थान सरकार के लोक निर्माण विभाग का एक बंगला महलों के निकट ही स्थित है जिसकी अनुमति अनुमण्डल पदाधिकारी डीग, भरतपुर या लोक निर्माण विभाग डीग के कनिष्ठ अभियन्ता से प्राप्त की जा सकती है।

जल महलों में प्रवेश हेतु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा, भारतीय नागरिक से 5/- रुपये प्रति व्यक्ति तथा विदेशी नागरिक से प्रति व्यक्ति 2 डॉलर या 100/- रुपये शुल्क लिये जाते हैं। 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों व छात्रों का प्रवेश निःशुल्क है। पर्यटक हस्तपुस्तिका (गाईड बुक) तथा सम्बन्धित फोटो पोस्ट कार्ड महल स्थित विक्रय-पटल अथवा कार्यालय, अधीक्षण पुरातत्वविद्, जयपुर मंडल 70/133-140, पटेल मार्ग, मानसरोवर, जयपुर या महानिदेशक कार्यालय, जनपथ, नई दिल्ली-11 से निर्धारित शुल्क की अदायगी पर आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं।

भूमिका

अ. संक्षिप्त इतिहास

अठारवीं सदी के पहले डीग, पूर्वी राजस्थान के एक छोटे से गाँव के रुप में जाना जाता था, जो तत्कालीन मुगल साम्राज्य के आगरा सूबे का एक भाग था। पारम्परिक रुप से यह क्षेत्र पवित्र ब्रजभूमि के अन्तर्गत आता है, जिसके अतीत का सम्बन्ध पौराणिक कथाओं के वीर कृष्ण और उनके वंशज यादवों से जोड़ा जाता रहा है, जो स्थानीय विश्वास के अनुसार आधुनिक जाटों के पूर्वज थे। कई विद्वानों द्वारा डीग की पहचान स्कन्द पुराण में वर्णित दीर्घपुर[1] के अलावे नंदीग्राम (नन्दगाँव), वृहत्सनु (बरसाना) तथा गोवर्धन की भी पहचान की गई है। डीग को छोड़कर उक्त सभी स्थल उत्तरप्रदेश के मथुरा जिले में स्थित है।

जो भी हो, पुरातात्विक दृष्टिकोण से इस स्थान की प्राचीनता का निर्धारण अभी शेष है। उल्लेखनीय है कि डीग के निकट स्थित जनूथर, कुसान[2], अऊ एवं बहज से पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के चारित्रिक मृद्भांड चित्रित घूसर मृद्भांड प्राप्त किए जा चुके है।

ऐतिहासिक रुप से डीग का अतीत, मुगलों के कुशासन के परिणामस्वरुप, डीग व इसके पड़ोसी ग्रामों के जाट-कृषकों के विद्रोह से जुड़ा हुआ है, जिसका नेतृत्व राजाराम (1686-88 ई०), उसके पिता भज्जासिंह,

---

1. गोवर्द्धने दीर्घपुरे मथुरायाम महावने नंदीग्रामे वृहत्सनायु..............II, स्कन्द-पुराण, भागवत महात्म्य, I, 38

2. निदेशक, पुरातत्व एवं संग्रहालय, राजस्थान से प्राप्त सुचना के आधार पर।

(1688–95 ई॰) तथा उसका छोटा भाई चूड़ामन (1695–56 ई॰) क्रमिक रुप से कर रहे थे[1]। चूड़ामन की मृत्यु के पश्चात उसका भतीजा बदनसिंह (1722–56 ई॰) ने इस समुदाय का नेतृत्व सम्भाला तथा आस-पास के कई जिलों में अपने आधिपत्य को सुदृढ़ कर लिया। इस प्रकार सही मायनों में भरतपुर जाट घराने का संस्थापक बदनसिंह ही था।

डीग के शहरीकरण का श्रेय भी बदनसिंह को जाता है, जैसा कि उसने अपने नव स्थापित जाट राज्य के मुख्यालय के रुप में इसका चयन किया। डीग और इसके पड़ोस के कुछ गाँवों- किसनपुर, मालपुर, अचलपुर तथा शाहपुर को घेरे में लेते हुए मिट्टी की विशाल प्राचीर खड़ी की गई। इसके ठीक पश्चात बदनसिंह ने एक विशाल महल का निर्माण करवाया, जो अब पुराना महल के नाम से जाना जाता है तथा मुख्य महल परिसर के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। सुदृढ़ दुर्ग तथा ऊँचे रक्षा प्राचीर सहित बुर्जों का निर्माण कुछ समय पश्चात् 1730 ई॰ में, बदनसिंह के पुत्र युवराज सूरजमल द्वारा करवाया गया। उल्लेखनीय है कि युवराज के रुप में सूरजमल की वैधता जयपुर के महाराज सवाई जयसिंह ने अपने अश्वमेघ यज्ञ के अवसर पर प्रदान की थी।[2] कतिपय लेखकों के अनुसार, लगभग इसी समय बदनसिंह के भाई रुपसिंह के द्वारा सुरम्य सरोवर ''रुप-सागर'' का निर्माण करवाया गया।

अपने इस उदीयमान जाट शासकों व उसकी बढ़ती शक्ति की छत्रछाया में जल्द ही डीग, भव्य इमारतों वाले आकर्षक शहर तथा व्यापार-वाणिज्य के एक प्रमुख केन्द्र के रुप में विकसित हो गया।

---

1. जाटों में सर्वप्रथम मुगलों के खिलाफ असफल विद्रोह करने वाला व्यक्ति गोकला था, (1669 ई॰) जो दिल्ली के निकटस्थ तिलपत का जमींदार था।

2. ज्वाला सहाय, *डीग, इट्स हिस्ट्री एंड पैलेसेस* (लाहौर, 1902) पृष्ठ संख्या-4

बदनसिंह का पुत्र तथा उत्तराधिकारी सूरजमल (1756–63 ई॰), जाट शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ तथा उसके शासनकाल में उक्त समुदाय की शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई। एक योग्य कूटनीतिज्ञ व सेनापति होने के साथ–साथ वह अपने समय का महान निर्माता भी था। यद्यपि प्रशासनिक मुख्यालय के रुप में उसने भरतपुर को ही ज्यादा महत्व दिया तथापि डीग से उसका मोहभंग भी न हो सका। परिणामतः डीग, सुरजमल के शासनकाल में दूसरी राजधानी के रुप में कार्य करने लगा। इस तरह डीग एक शहर के रुप में कहीं अधिक आर्कषक, समृद्ध एवं परिमाप में बड़ा होता चला गया।[1] कई मुगल भद्रजनों, युवराजों, व्यापारियों आदि के अपने परिवार व धन की सुरक्षा हेतु यहाँ बसाव होने के कारण यह शहर ऊँची अट्टालिकाओं से सुसज्जित नजर आने लगा। सुन्दर एवं विशाल बगीचों से शहर का सौन्दर्यीकरण किया जाना, सूरजमल की सबसे महत्वपूर्ण कलात्मक देन थी, जो आज भी जाटों के इस महानायक की गौरवपूर्ण स्मृति के रुप में जीवित है। महलों का निर्माण कार्य उसके शासन के उत्तरार्ध में प्रारम्भ किया गया और ऐसा माना जाता है कि अपनी मृत्यु सन् 1763 ई॰ तक वह गोपाल सागर सह गोपाल भवन तथा किशन भवन का निर्माण पूरा कर चुका था। एक अन्य विद्वान उसे सूरज भवन के निर्माण का भी श्रेय देते हैं, जो संदेह से परे नही है।[2] इनके साथ ही, ऐसा प्रतीत होता है कि हरदेव भवन का परिवर्द्धन तथा डीग स्थित कतिपय बड़े तालाबों तथा

1. डीग के इन महलों, सरोवरों, बगीचों तथा बाजारों का काव्यात्मक उल्लेख 'सुजान–विलास' नामक ग्रन्थ के पदों में मिलता है। ब्रज भाषा की इस कृति का रचनाकार सोमनाथ था, जो सुरजमल का दरबारी कवि हुआ करता था।... देखें, रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, "*भरतपुर और अतीत के चिन्ह*", भरतपुर, 1956, पृष्ठ सं. 14-17

2. कालिका रंजन कानूनगो, "*हिस्ट्री ऑफ दी जाट्स–1*", (कलकत्ता–1925) पृष्ठ सं.–289

इमारतों का निर्माण भी उसी ने कराया। इन निर्माणों के लिये, ऐसा माना जाता है कि सूरजमल ने दिल्ली के एक बर्खास्त वजीर इमाद–उल–मुल्क से धन प्राप्त किया था, जो कि अब इस जाट प्रमुख का सहयोगी बन गया था। यह सारा निर्माण कार्य सुरजमल के मंत्री जीवाराम बनचारी के निर्देशन में संपन्न हुआ, जिसके निवास गृह को रामभवन का नाम दिया गया। यह भवन इन दिनों स्थानीय अस्पताल के रुप में प्रयुक्त हो रहा है।

सूरजमल की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र जवाहिर सिंह (1764–68 ई०) डीग के जाट प्रभुत्व का प्रमुख बना। अपने अल्पकालीन शासन के दौरान उसने कुछेक भवनों के साथ–साथ अपने पिता के योजनानुसार सूरज भवन का निर्माण करवाया तथा सम्भवतः बगीचों एवं फव्वारों के निर्माण कार्य को अंतिम रुप दिया। स्थापत्य कला के एक महान प्रेमी के रुप में उसने मुगलों के आगरा व दिल्ली स्थित इमारतों की कीमती वस्तुओं को लूटा और अपने नगर को उनसे समृद्ध किया।

डीग स्थित भवनों में संगमरमर का प्रयोग तथा सजावट की पच्चीकारी (Pitra Dura) तकनीक के उपयोग किये जाने का श्रेय भी इस जाट युवराज को जाता है। सौन्दर्यीकरण के इन अनुप्रयोगों में मुगल अभिरुचि की स्पष्ट झलक महसूस की जा सकती है। कई स्थापत्य कृतियाँ सूरजमल के समय से ही निर्माण प्रक्रिया में थी, तथा कई के सुनिश्चित योजनानुसार निर्माण किया जाना था, पर जवाहिर सिंह के आगरा में हुए आकस्मिक निधन (1768 ई०) से वे सारे अधूरे रह गये और फिर कभी पूरे नहीं किए जा सके। शहर के अन्दर जवाहरगंज का बसाव भी इस शासक की ही देन थी, और सम्भवतः निकट स्थित लक्ष्मणजी का मंदिर भी।

इसके बाद का इतिहास डीग के पतन तथा जाट शक्ति के क्रमिक ह्रास की कहानी है। यद्यपि अगले दो शासको के संक्षिप्त शासन के दौरान यह अपने शाही अस्तित्व को कायम रख सका, तथापि सन् 1776 में मुगल सेनापति मिर्जा नजफखान द्वारा अपनी ही मिट्टी पर मात खा जाने के पश्चात् इसकी स्थिती को जबरदस्त धक्का पहुँचा। जो भी हो, सन् 1787 ई० में डीग ने जाट युवराज रणजीत सिंह के रुप में फिर से अपना नया नायक पाया, जिसने पुनः सन् 1804 ई० में ब्रिटिश के हाथों डीग को खो दिया। सन् 1805 ई० में ब्रिटिशों ने इसे रणजीत सिंह को वापस सौंप दिया। आगे आने वाले समय में कोई महत्वपूर्ण घटना नही हुई और भरतपुर के शासक कतिपय परिवर्तनों के साथ इमारतों को अपने निवास के रुप में प्रयुक्त करते रहे।

ब. स्थापत्य

प्रायः 'जाट-शैली' की संज्ञा से विभूषित किए जाने वाले डीग के स्थापत्य का प्रतिनिधित्व उसके महलों व भवनों द्वारा किया जाता है, जिसमें वस्तुतः स्थापत्य की कोई विशिष्ट या नवीन शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। बदनसिंह द्वारा निर्मित महलों को छोड़कर अन्य सभी महल वास्तव में एक ही योजना विन्यास के अभिन्न अंग है, और उनमें स्थापत्य की अपनी कोई मौलिकता नहीं है। इसके बावजूद इनकी साज-सज्जा व प्रस्तुतिकरण का जो एक सौन्दर्य है, वह निश्चित रूप से इस स्थापत्य की अपनी महत्त्वपूर्ण विशिष्टता हैं। सुरम्य भू-संरचना सहित स्थापत्य के मूल तत्व वही हैं जिनका प्रयोग मुगल शासक शाहजहाँ के इमारतों में हुआ। ऐसा होना समय के सन्दर्भ में बिल्कुल स्वाभाविक भी था, जैसा हम पाते हैं कि मुगल दरबार व उसकी संस्कृति ने उत्तर भारत के समस्त समकालीन रियासतों के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य किया। लेकिन जहाँ एक ओर ताज स्थपतियों के

वैध उत्तराधिकारी उसके लचीले सौन्दर्य प्रस्तुति की शैली को अब महत्वहीनता की ओर ले जा रहे थे, वहीं जाट निर्माता अपने इस नितान्त स्थानीय निर्माण में उन्हीं तत्वों के तार्किक विकास अपनाकर उसे बिल्कुल विशिष्ट करार दे रहे थे। इस सन्दर्भ में सूरजमल, महान् मुगल निर्माताओं के कलात्मक विरासत के योग्य उत्तराधिकारियों में से एक था। यही कारण है कि लौकिकता, अनुपातगत संतुलन तथा इन तत्त्वों का उचित सामंजस्य, जहाँ इस स्थापत्य शैली की अनिवार्यता बन पड़ी है, वहीं अपने विकास के अल्पकालीन होने के बावजूद कतिपय तत्व, नये व विशिष्ट बनकर सामने उभरे हैं।

डीग की स्थापत्य कला को किसी विशिष्ट निर्माण खंडों अथवा चरणों मे वर्गीकृत नहीं किया जा सकता, तथापि बदनसिंह व सूरजमल द्वारा निर्मित भवनों के अवलोकन से इनके निर्माणों में रूचिगत भिन्नता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। जहाँ एक ओर बदनसिंह द्वारा निर्मित पुराने महल विशालता, कम संतुलित, अन्दरूनी व्यवस्था में कम आकर्षक, तथा अपेक्षाकृत कम सजावट वाले तोड़े व स्तम्भों की चारित्रिक विशिष्टता लिए हुए है, वहीं दूसरी ओर सूरजमल निर्मित भवन अपने विभिन्न अवयवों में सामंजस्य व अनुपातगत संतुलन, पाषाण भित्तियों पर लचीली उकेरी तथा दोहरी छत व्यवस्था द्वारा आकर्षक बन पड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँ पिता की अभिरूचि एक राजपूत युवराज के ज्यादा निकट थी तो वहीं पुत्र एक मुगल अमीर के ज्यादा करीब था।

निर्माण सामग्री के रूप में यहाँ ईंट, पाषाण खण्ड तथा चूने के मसाले का प्रयोग किया गया है। भवन की दीवारें गुलाबी रंग के बलुआ पत्थरों की पट्टिका से मढ़ दी गई है, अथवा उनपर अच्छी किस्म की चिनाई की गई है। अपवाद स्वरूप सूरजभवन संगमरमर से निर्मित है तथा किले के अन्दर के भवनों में लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग भी किया गया है।

दीवारों के अन्दरूनी भागों में प्रयुक्त पाषाणखण्डों को निकट स्थित पहाड़ताल से लाया गया है, जबकि गुलाबी बलुआ पत्थर, भरतपुर जनपद स्थित वंशी तथा पहाड़पुर के खदानों से मँगाया गया है। फतेहपुर सीकरी, आगरा व दिल्ली के भवनों में प्रयुक्त लाल बलुआ पत्थरों की तुलना में डीग के गुलाबी पाषाण, कहीं ज्यादा कठोर तथा मूर्ति निर्माण हेतु कहीं ज्यादा उपयुक्त जान पड़ता है।

डीग की स्थापत्य शैली प्राथमिक तौर पर सीधे शहतीरों वाली शैली (ट्रिबिएट आर्डर) का है, तथापि कई उदाहरणों में अनुपाकार शैली (आरकुएट आर्डर) का भी प्रयोग हुआ है। अधिकतर मेहराब दो स्तम्भों से निकलते पंखेदार अनुकृतियों के जुड़ने से बने हैं।

अलंकृत स्तम्भों पर भारित पर्णिल मेहराब, विशाल कक्ष, सपाट छत, बंगाली ढंग के छत से युक्त झरोखे व दीर्घाएँ, भवनों की संतुलित ऊँचाई तथा सुविधाजनक आंतरिक व्यवस्था इस स्थापत्य शैली की आम विशेषताएँ हैं। स्थापत्य के अन्य आकर्षणों में मेहराबों से टपकती पाषाण कलियाँ, पद्म आधार वाले सलामीदार स्तम्भ तथा उनपर स्थित पंखुड़ीयुक्त पुष्प शीर्ष आदि महत्वपूर्ण है। छत की धरण प्रायः समतल है, तथापि कई जगहों पर चापाकार व गुम्बदाकार धरण प्रयुक्त हुआ है। मेहराबों के अन्य प्रकारों में अर्द्धवृत्ताकार तीन घुमाव वाले तथा नुकीले प्रक्षेपण वाले मेहराबों का भी सीमित प्रयोग किया गया है। यह आश्चर्यजनक है कि नुकीली प्रक्षेपणों वाला यह मेहराब मुगलों के तथाकथित तोड़ेदार (ट्यूडर) मेहराब की अनुकृति नहीं है, जैसा कि अन्य कई अवयवों को अपनाने के क्रम में हुआ है। यह कतिपय उन प्रारम्भिक मौलिक प्रारूपों से साम्य रखता है, जिनके घुमाव गोलाई लिये हैं तथा शीर्ष नुकीले।

स्थापत्य के किसी भी सुन्दर उदाहरण की भाँति डीग के इन महलों का भी अपना एक परोक्ष निहितार्थ है, और तदनुसार जहाँ एक ओर

मुगलों के जमीं पे जन्नत की विलासिता पूर्ण सोच है, वहीं दूसरी तरफ वर्षा ऋतु के आनंद में भारतीय परम्परा का जुड़ाव भी निहित है।

ऐसा प्रतीत होता है कि योजनाकारों ने प्राचीन जलमहल की परिकल्पना को मुगल बाग प्रणाली के साथ सफलतापूर्वक संयोजित कर दिया। निश्चित रूप से उद्यान, इमारतों के अवस्थिती हेतु केन्द्र बिन्दु के रूप में कार्य किया है। यह प्रतीत होता है कि डीग भवन योजनाकारों ने ताजमहल के योजना-विन्यास से कुछ प्रेरणा भी ग्रहण की है। उद्यान की भुजाओं पर इमारतों का स्थित होना महान शाही मकबरे की योजना से इसकी लगभग समरूपता प्रदर्शित करता है। ताज की स्थिति डीग के संदर्भ में गोपाल भवन की है, जिसकी पृष्ठभूमि में नदी के प्रभाव को गोपाल सरोवर के रूप में दिखाया गया है। परन्तु ताजमहल से भिन्न यह भवन उतनी शानो शौकत से खड़ा नहीं दिखता और न ही कोई अन्य भवन इसके पूरक नजर आते हैं। संभवत: जाट स्थपतियों ने अपने ग्रामीण समुदाय के लोकतांत्रिक बसावट को यहाँ प्रतीक रूप दे दिया है।

यद्यपि डीग भवनों के स्थापत्य में कोई प्रभावशाली विशिष्टता नहीं है, तथापि प्रत्येक भवन अपने गौरव व नजाकत के साथ खड़ा है। यह तथ्य उनके अवधारणात्मक एकता को कहीं से भी खंडित नही करता अपितु स्थापत्य और उद्यान के मध्य बने तालबद्धता को कहीं मजबूत ही करता है। भवनों के समतल छत के कारण अत्यधिक संख्या में कतारबद्ध स्तंभों की उपस्थिति, स्थापत्य के दृष्टि से आकर्षक न हो सके तथापि भवनों का सुनियोजित विन्यास, अनुपातगत संतुलन, सुविधाजनक बड़े कक्ष, आकर्षक एवं सुसंगत मेहराबदार बीथिकाएँ, मनमोहक हरियाली, लोमहर्षक सरोवर तथा फव्वारे युक्त नहर डीग के भवनों की चारित्रिक विशिष्टता बन पड़ी है। उक्त सभी तथ्यों का मिश्रण नि:संदेह विलास, सौन्दर्य, तथा ऐश्वर्य का एक अद्‌भुत समागम है।

स. अलंकरण

डीग भवनों के अलंकरण निम्न तराश वाले शिल्प हैं, जिनमें वानस्पतिक अलंकरणों को प्रमुखता दी गई है। अलंकरण की दृष्टि से जाट सज्जाकारों का कोई मौलिक योगदान नहीं है और न ही उसे कुछ खास आकर्षण बनाने का प्रयास किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपने शिल्प हेतु स्वयं की प्रेरणा के बजाय शिल्पकारों के निर्देशन पर ज्यादा निर्भर रहे। कलाकारों ने शाहजहाँ कालीन मुगल सज्जा की नकल पर स्वयं को केन्द्रित किया और फिर इनकी नक्कासी में अपनी कला प्रवीणता का प्रदर्शन किया। पाषाण शिल्प के अपवाद स्वरूप पुराना महल के कतिपय मलीन पड़ चुके चित्रकारी हैं, जिनमें अरबी शैली की मुगल सजावट के अतिरिक्त कतिपय घोड़े, हाथी सहित हिन्दू पौराणिक गाथाओं का भी अंकन हुआ है। इनकी चारित्रिक विशिष्टताओं में प्रखर बाह्य रेखा, प्रवाहगत विषयवस्तु तथा रंगों का चमकीला नियोजन प्रमुख है। चित्रों की शैली लगभग पारम्परिक है और पश्चिमी भारत के प्राचीन शैली के ही स्मृति शेष हैं, तथापि इनमें मुगल कूची का हल्का प्रभाव देखा जा सकता है।[1] संगमरमर पर की गई पच्चीकारी काफी सीमित मात्रा में है जो वस्तुतः आगरा व दिल्ली के मुगल इमारतों के अंग है और इसे डीग वास्तु शिल्प की आलंकरणिक विशिष्टता नहीं माना जा सकता।

शिल्पकारी के उकेरन में कतिपय सीमाओं का ध्यान रखा गया है, जिसके कारण इमारतों और उनकी सजावट के बीच एक अच्छा तालमेल बन पड़ा है। अलंकरण प्रारूप में पत्तियों व फूलों के विविध प्रकार ही प्रमुख रूप से प्रयुक्त किए गए हैं तथा इनका अधिकतर प्रयोग स्तम्भ शीर्षो, मेहराब के फैलावों, फव्वारों तथा पालकीनुमा छतों की मुंडेरों पर हुआ है। यह सत्य है

---

1. नन्द भवन के चार अष्टकोणीय स्तम्भों पर बने चित्र काफी बाद के हैं, अतः उनका यहाँ उल्लेख नहीं किया गया है।

कि ये अंकन किसी यथार्थवादी शिल्पी के गणित नहीं है, तथापि पादप जीवन के कोमलता को छैनी के हलके प्रयोग व गोलाई युक्त घुमावों द्वारा बखूबी परिलक्षित कर दिया गया है। उक्त तथ्य शिल्पकारों के उनकी विषय वस्तु पर गहन पकड़ को स्पष्ट करता है। यद्यपि इस प्रकार का अलंकरण अपने आप में कुछ खास महत्त्व नही रखता, तथापि उद्यानयुक्त भवनों में यह निश्चित तौर पर महत्वपूर्ण हो जाता है। अन्य अलंकरण प्रारूपों में सजावटी छत, फूलदान, मदिरापात्र, इत्रदान, फलयुक्त तश्तरी, कलात्मक साइप्रस के वृक्ष तथा विभिन्न प्रजातियों के पक्षी शामिल हैं। वानस्पतिक अभिप्रायों द्वारा छद्म ताख, वर्ग, आयत आदि प्रदर्शित किये गए हैं। प्रायः पत्रवल्लरियों का प्रयोग किनारों व वेदिकाओं के सजावट हेतु किया गया है। मेहराबों के शीर्ष पर या तो पूर्णविकसित पुष्प अंकित किया गया है या मुगल शैली के अन्दर की ओर मुड़े पंखुड़ियों वाले। इनमें से पहले को कहीं ज्यादा प्राथमिकता दी गई है।

द. उद्यान एवं अन्य आकर्षण

डीग उद्यान की योजना मुगल चार बाग प्रणाली के समरूप है, जिसमें एक वर्गाकार भूखण्ड को नहर प्रणालियों द्वारा चार बराबर भागों में विभाजित कर दिया गया है। ये नहरं भूखण्ड के ठीक मध्य में एक दूसरे से मिलती हैं। उद्यान, भूखण्ड व नहर दोनों की तुलना में नीचे स्थित है जिसके कारण यह गर्त में डूबता सा प्रतीत होता है। यह डीग के उद्यानों की उल्लेखनीय विशिष्टता है। उद्यान में सजावटी पाषाण गमलों का अभाव है, जो योजनाकारों द्वारा प्रारम्भिक उद्यानों के विरल व अनियमित रोपन की तुलना में सघन व नियमित पुष्पारोपण की योजना का प्रदर्शक है। ऐसा प्रतीत होता है कि फूलों और पौधों को उगाते समय मौलिक रूप से मुगल उद्यान प्रणाली का ही अनुकरण किया गया है।

जल द्वारा कृत्रिम सौन्दर्य उत्पन्न करने में जाट वास्तुकारों को अन्य की तुलना में कहीं ज्यादा सफलता मिली है। नहरों, सरोवरों, विभिन्न प्रकार के जलप्रपातों तथा वास्तु शिल्प में मानसून की परिकल्पना को ढालकर जल द्वारा अद्भुत सौन्दर्य उत्पन्न कर दिया गया है। यद्यपि वास्तु शिल्प में मानसून की परिकल्पना को साकार किया जाना कुछ फंतासी सा प्रतीत हो सकता है तथापि यह चारित्रिक रूप से विशुद्ध भारतीय है। यह विचार ही मूलतः कवि की कल्पना जैसा है जिसका प्रयोग बृजभाषा के शृंगारिक साहित्य परम्परा में आसानी से पाया जा सकता है।

कुल मिलाकर यहाँ लगभग पाँच सौ फव्वारों की व्यवस्था है। ये प्रायः किसी विशिष्ट प्रकार का स्वरूप धारण किए हुए हैं। इनमें से अधिकतर, भवनों में प्रयुक्त स्तम्भों की लघु अनुकृति हैं। कुछ स्थिति में जल की धारा को रोककर उसे तीव्र प्रवाह वाली बूंदों के रूप में बहाव की व्यवस्था की गई है। कुछ स्थानों पर जल प्रपातों की एक ऐसी विशिष्ट व्यवस्था है जिसमें फव्वारों से निकलने वाला जल खिले पुष्प का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। सूरज भवन के सम्मुख भाग वाले मंच से गिरने वाला जलप्रपात एक पतली चादर का स्वरूप ग्रहण कर अद्वितीय सौन्दर्य उत्पन्न करता है।

3. स्मारक

(अ) भवन

(*i*) योजना-विन्यास

डीग के भवनों[1] के योजना विन्यास का केन्द्र इसका वर्गाकार उद्यान है, जिसके चार भुजाओं पर चार इमारतें खड़ी हैं तथा पूर्वी व पश्चिमी पृष्ठभूमि में क्रमशः रूप सागर तथा गोपाल सागर नामक विशाल सरोवर हैं। पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण में क्रमशः केशव-भवन, गोपाल-भवन, नन्द-भवन तथा किशन-भवन की अवस्थिति है। गोपाल-भवन के अनुपूरक के रूप में उत्तरी व दक्षिणी छोर पर क्रमशः सावन तथा भादो भवन स्थित है। केन्द्रीय उद्यान के उत्तर में एक अन्य आयताकार भूखण्ड है, सम्भवतः जिस पर मौलिक योजनानुसार इमारतों का दूसरा भाग बनाया जाना था, जो कभी पूरा न हो सका। समूह के अन्य इमारतों में उद्यान के दक्षिणी पश्चिमी कोने पर स्थित तथा किशन-भवन से लगा हुआ सूरज-भवन तथा हरदेव-भवन है। उत्तरी छोर पर स्थित सिंह-पोल मुख्य प्रवेश द्वार है। इसके अतिरिक्त दो अन्य प्रवेश द्वार नंगा-द्वार तथा सूरज-द्वार हैं, जो क्रमशः दक्षिण-पश्चिमी तथा उत्तर-पूर्वी कोने पर स्थित हैं।

---

1. भवनों के नाम, यथा-गोपाल, हरदेव=हरि+देव, किशन, केशव तथा नन्द पर वैष्णव प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। स्पष्टतः यह बृज के पौराणिक नायक श्री कृष्ण के प्रति जाट शासकों के श्रद्धा एवं भक्ति का परिचायक है।

(*ii*) गोपाल-भवन

अपनी विशालता, सटीक अवस्थिति एवं उत्कृष्ट वास्तुशिल्प के कारण गोपाल-भवन डीग का सर्वोत्तम भवन है तथा किसी भी समकालीन राजपूत स्थापत्य से प्रतिद्वन्दिता करने में सक्षम है। इसका वास्तु सौन्दर्य जल से परावर्तित होकर वातावरण में एक अद्भुत आकर्षण पैदा करता है। बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ भवन के अन्दरूनी कक्ष, मध्य युगीन शाही निवासों के विपरीत अपेक्षाकृत अधिक प्रकाशयुक्त तथा हवादार हैं। भवन की मूल योजना 62.18×18.90 वर्गमीटर के आयताकार भूखण्ड पर आधारित है, जिसमें सामने का लम्बी भुजा वाला भाग आगे की ओर निकला हुआ है। 9.75 मीटर की ऊँचाई तथा सपाट छत वाला यह भवन मुख्यरूप से तीन भागों में बँटा है। मुख्य कक्ष विशाल एवं एक मंजिला है। पार्श्ववर्ती भाग दो मंजिला तथा पिछला भाग चार मंजिला है। पीछे वाले भाग में दो आयताकार भू-तलीय कक्ष हैं, जिनका प्रयोग गर्मी से ठंडक पाने एवं मछली के शिकार हेतु किया जाता था।

ललित मेहराबों तथा उत्कृष्ट नक्काशी वाले स्तम्भों से सुसज्जित इस भवन के सामने की ओर निकला मुखमण्डल असाधारण है। 23.16 ×16.76 वर्गमीटर का यह भाग वस्तुतः राजकीय स्वागत कक्ष है। मध्य भाग में मेहराबों की पंक्तियुक्त यह एक मंजिला कक्ष शाहजहाँ के दीवान-ए-आम की अनुकृति है, और ठीक उसी तरह यहाँ भी पिछले दीवार से झाँकती वेदिका युक्त दीर्घा (Alcove) मौजूद है।[1] दीर्घा के

---

1. डेवेनिश के अनुसार उक्त दीर्घाएँ बहुधा शाही परिवार की स्त्रियों द्वारा प्रयुक्त की जाती थी। .....देखें, जे.ए. डेवेनिश, "*भवन्स ऑर गार्डन पैलेसेस ऑफ डीग*", इलाहाबाद, 1903, पृष्ठ संख्या 53

ठीक सामने निचली सतह पर संगमरमर से निर्मित पुराने फव्वारों के आधुनिक संस्करण से सुसज्जित एक आयताकार कुण्ड है। दोनों पार्श्वों में उपरी मंजिल पर मेहराब युक्त दीर्घाएँ इस कक्ष की अन्य विशिष्टता है। मुख्य कक्ष के ठीक दूसरी तरफ मेहराबों से घिरा एक छोटा आयताकार कक्ष है। यह वस्तुतः पश्चिमी भुजा से आगे की ओर निकला भाग है, जिसके अन्दर दो फव्वारे मौजूद हैं। इस कक्ष से सरोवर व उसके पीछे स्थित उद्यान (रानी-बाग) का दृश्यावलोकन बड़ा ही मनोरम प्रतीत होता है। उक्त दो कक्षों के मध्य अन्य कई कक्ष मौजूद हैं, जिनकें प्रवेश द्वारों के ऊपर विद्यमान बंगाल शैली के सजावटी छत, उन पर उत्कीर्ण शिल्प एवं प्रकाश व्यवस्था हेतु बने गलियारे इनकी महत्वपूर्ण विशिष्टताएँ हैं।

भवन के दोनों पार्श्व विशुद्ध रूप से निवास हेतु बनाये गए हैं। इनमें से प्रत्येक पार्श्व के सम्मुख तथा पृष्ठ भाग में समान क्षेत्रफल (7.62 वर्ग मीटर) वाले एक-एक कक्ष, मध्य में बरामदा तथा विभिन्न माप के कुछ लघु कक्ष बने हैं। उपरी मंजिल पर भी यही निर्माण दोहराया गया है। प्रत्येक कक्ष का मुख भाग तीन मेहराब वाले प्रवेश द्वारों से सुसज्जित है। भू-तल वाले मध्य कक्ष में चार अलंकृत स्तम्भों द्वारा एक मंडप बना है जिसके मध्य में फव्वारे युक्त बेसिन की उपस्थिति आकर्षक है। उत्तरी पार्श्व के एक कक्ष में काले बैसाल्ट पत्थर तथा दक्षिणी पार्श्व के एक कक्ष में सफेद संगमरमर के शाही तख्त मौजूद हैं। कहा जाता है कि ये दोनों शाही तख्त जवाहिर सिंह द्वारा युद्धोपरांत दिल्ली के शाही भवनों से लाये गये थे।

गोपाल-भवन के मुखमण्डल के ठीक सामने 10.97×7.62 वर्गमीटर का एक कुण्ड है जिसमें पन्द्रह फव्वारे मौजूद हैं। यह दोनों ओर से नहर

प्रणाली से जुड़ा है और जिसकी योजना भवन के कोनों के साथ पूर्णत: सामंजस्य स्थापित करती है। पश्चिमी बाह्य भाग इस भवन का सबसे अभीष्ट घटक है, जो गोपाल सागर के जल से उदित होता हुआ प्रतीत होता है। यह भाग लटकते छतरियों व लघु दीर्घाओं से सुसज्जित है। महल की छत कभी सलामीदार पार्श्वों वाली छतरी से सुसज्जित थी, परन्तु वर्तमान में इसकी अनुपस्थिति से महल का आकर्षण कुछ कम अवश्य हुआ है।

(*iii*) संगमरमर का झूला

गोपाल-भवन के ठीक सामने संकरे व छोटे मेहराबों पर आधारित लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित वेदिकायुक्त एक मंच पर धवल संगमरमर का एक अलंकृत मेहराब युक्त हिडोंला या झूला स्थित है। कहा जाता है कि यह झूला बयाना के निकट बैर स्थित फुलहारी-महल से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लाया गया था। परन्तु यह अधिक संभव है कि मूलत: यह झूला सूरजमल या जवाहिरसिंह के द्वारा विजय स्मृति के रूप में दिल्ली से लाया गया हो।

यह हिंडोला वस्तुत: मौलिक झूले का मेहराबी ढांचा है, जिसके शीर्ष के मध्यस्थ दो छल्लों से झूले को लटकाया जाता था। इसका ऊपरी भाग पार्श्वों में दो छोटे ठोस गुम्बद तथा मध्य में नुकीला शंकु शीर्ष द्वारा अलंकृत है। मंच के आधार सतह पर पच्चीकारी शिल्प विधा का अंकन है, साथ ही हिजरी सम्वत 1041 (सन् 1630-31 ई.) का एक अरबी लेख है, जिसमें किसी शासक का नामोल्लेख किये बिना उसके शासन के चौथे वर्ष का उल्लेख है। उपयुक्त तिथि शाहजहाँ के शासन काल का चौथा वर्ष है। अत: इस झूले पर शाहजहाँ का स्वामित्व स्वीकार किया जा सकता है।

(iv) दीर्घाएँ

गोपाल-भवन के उत्तरी व दक्षिणी पार्श्वों में दो दीर्घाएँ क्रमशः सावन (जुलाई-अगस्त का महीना) तथा भादो (अगस्त-सितम्बर का महीना) मुख्य भवन के पूरक के रूप में मौजूद हैं। गोपाल-भवन की वेदिका के पश्चिमी भुजा से लटकती ये दीर्घाएँ भवन के पश्चिमी प्रक्षेपित भाग के बिल्कुल सीध में स्थित होने से मुख्य इमारत के वास्तु शिल्प को सम्पूर्णता प्रदान करती हैं। प्रत्येक दीर्घा वस्तुतः दो मंजिली है, परन्तु सामने से देखने पर केवल ऊपरी मंजिल ही नजर आती है। दीर्घाओं की छत पालकीनुमा है, जिनके मुन्डेर उत्कृष्ट नक्काशी वाले शंकुओं की पंक्ति से सुसज्जित हैं। ऊपरी मंजिल 10.97×7.00 वर्गमीटर का एक कक्ष है, जो चारों ओर से अलंकृत मेहराबों द्वारा खुला है। दीर्घाओं का मुख्य आकर्षण इसकी निचली मंजिल है, जो वर्षा ऋतु की परिकल्पना को साकार करती प्रतीत होती है। यह मध्यस्थ कक्ष, पीछे का गलियारा तथा आगे का बरामदा द्वारा तीन भागों में व्यवस्थित है। पीछे की दीवार के मध्य में शानदार नक्काशी युक्त जलप्रपात का निर्माण कराया गया है। मध्य में फव्वारा युक्त बेसिन है। कक्ष के बाहर मेहराबों के ठीक ऊपर तांबे की नालियाँ लगी हैं, ताकि उनसे प्रवाहित होने वाला जल चापाकार होकर सामने के बरामदे पर गिरे और इस प्रकार बारिश का मनोरम दृश्य उत्पन्न हो सके। दीर्घाओं के आधार में लगे तोड़े, विशेषकर कोनों पर प्रयुक्त अपेक्षाकृत लम्बे तोड़े इस पूरी संरचना को एक तैरते हुए जलयान का स्वरूप प्रदान करते हैं। ऊपरी मंजिल के सामने नहर प्रणाली व फव्वारों से युक्त उद्यान की मौजूदगी वर्षा की परिकल्पना एवं तदुपरान्त आई हरियाली को जीवंत करते प्रतीत होते हैं।

(v) सूरज-भवन

निर्माता सूरजमल के नाम से विभूषित धवल संगमरमर का यह सुंदर-भवन, असामान्य अवस्थिति के कारण अपने सौन्दर्य को कुछ कम करता नजर आता है। 26.80 मीटर वर्गाकार क्षेत्र में नियोजित इस एक मंजिले भवन की 6.70 मीटर ऊँची छत समतल है। निर्माण में प्रयुक्त सामग्री तथा इसके वास्तुशिल्प की सामान्य विशिष्टताएं शाहजहाँ के स्थापत्य कला की याद ताजा करती हैं और इसका स्थापत्य प्रारूप कतिपय प्रारंभिक मुगल इमारतों से साम्य रखता है।

उक्त भवन की दीवारों में प्रयुक्त संगमरमर की पट्टिकाएँ अपने आकार व संरचना में एक दूसरे से सामंजस्य नहीं रखतीं, अतः ऐसा प्रतीत होता है कि ये अवयव मुगलों के एक से अधिक शाही इमारतों से प्राप्त किए गये थे। ऐसी धारणा है कि ये पट्टिकाएं दिल्ली के किले स्थित राजकुमारियों के एक स्कूल का था, जो अन्य कई इमारतों के साथ जवाहिर सिंह के आक्रमण का शिकार हुआ। कतिपय नवीन पट्टिकाओं का भी प्रयोग किया गया है जो किसी इमारत के अंश नहीं थे। इस बात का प्रमाण कुछ पट्टिकाओं पर डीग के वास्तुकारों के शिल्पी चिन्हों की मौजूदगी है। सम्भवतया जवाहिर सिंह की मृत्यु हो जाने के कारण यह इमारत पूरी तरह से निखर नहीं पाया। इस भवन का अधिकांश पश्चिमी हिस्सा, इसकी नींव, छज्जे तथा तोड़े बलुआ पत्थर के बने हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि संगमरमर द्वारा इसे पाटने का विचार बाद का था तथा संगमरमर से उनका सामंजस्य बिठाने हेतु नींव को छोड़कर उक्त सभी को चूने के अच्छे मशाले से लेपित कर दिया गया।

यह भवन चारों ओर से बरामदा युक्त है तथा प्रत्येक बरामदा पाँच मेहराब वाले द्वारों से सामने की ओर खुला है। बरामदे के प्रत्येक कोनों पर

एक-एक कमरा स्थित है, जिसकी छत अन्दर से मुगल इमारतों के समान गुम्बदनुमा तथा कमल की नक्काशी युक्त है। प्रत्येक बरामदे के मध्य में फव्वारा युक्त ताल मौजूद है, बरामदों के पीछे 0.91 मीटर ऊँचा मंच है, जिसके ऊपर चार पार्श्व कक्ष युक्त एक केन्द्रीय कक्ष मौजूद है। ये सभी कक्ष आपस में गलियारों द्वारा जुड़े हैं। केन्द्रीय कक्ष की दीवार का निचला भाग उत्कृष्ट पच्चीकारी शिल्प से सुसज्जित है और यही शिल्पकारी गलियारों तथा उनसे सम्बद्ध कक्षों के फर्श में भी मौजूद है। भवन के मुख्य कक्ष को खिड़कियों द्वारा प्रकाशमय किया गया है। इन खिड़कियों की उपस्थिति दीवारों की एकरसता को बहुत हद तक कम कर देती है। अर्द्धवृत्ताकार मेहराब से सहारा लिये दीर्घाओं की ढोलाकार छत आकर्षण की विषय-वस्तु है। संगमरमर की पट्टिकाओं पर मुगल शिल्पियों द्वारा पित्रा-ड्यूरा शैली में उत्खचित पौधे भवन की सुन्दरता को रोचक बना देते हैं।

सूरज-भवन की आन्तरिक व्यवस्था किसी निवास कक्ष की अपेक्षा काफी हद तक एक दीर्घा की भाँति है, सम्भवतः जिसका विन्यास विशेषकर स्त्रियों के आराम व मनोरंजन को ध्यान में रखकर किया गया था। भवन के पूर्व में स्थित बरामदा युक्त कतिपय कमरों का निर्माण सम्भवतः इसकी स्थापत्य प्रभावोत्पादकता को संजोए रखने हेतु किया गया था। निःसन्देह सरोवर व उद्यान के मध्य स्थित एवं डीग स्थापत्य की विशिष्टता लिए हुए, संगमरमर की पट्टिकाओं में लिपटा यह भवन किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

(*vi*) हरदेव-भवन

सूरज-भवन के ठीक पीछे स्थित यह आकर्षक आयताकार उद्यानयुक्त भवन योजना विन्यास में मध्ययुगीन विशेषकर मुगलकालीन

भवनों के समरूप है। मुख्य परिसर के कोने में इसकी अवस्थिति से प्रतीत होता है कि यह डीग भवन योजना का मुख्य भाग नहीं था। सम्भव है कि यह प्रारम्भ में एक छोटा भवन रहा हो तथा बाद में अपनी आवश्यकताओं एवं अभिरूचि के अनुकूल सूरजमल ने इसका पुर्ननिर्माण कराया। यह भी सम्भव है कि इसका उत्तरी भाग सूरज-भवन के निर्माण की आवश्यकता हेतु विनष्ट कर दिया गया हो, जिसकी पुष्टि भवन की पूरी संरचना के गहन अवलोकन से की जाती है। भवन का पार्श्व भाग मौलिक जान पड़ता है।

भवन का मुख्य भाग दो मंजिला है, जो प्रभावोत्पादक मुद्रा में सामने स्थित उद्यान को निहारता जान पड़ता है। निचले तल में आगे की ओर निकला एक केन्द्रीय कक्ष है, जो दोहरे स्तम्भों की पंक्तियों से बने मेहराबों से खुला है। हॉल के केन्द्र में चार स्तम्भों पर अश्रित मेहराब युक्त मण्डप हैं, जिसे तीन ओर से पुनः मेहराबयुक्त स्तम्भों की पंक्तियाँ घेरती हैं। इस हॉल के पीछे अपेक्षाकृत ऊँचे आधार पर एक आयताकार गलियारा है, जिसकी छत ढोलाकार है। हॉल के दोनों पार्श्वों में बरामदा युक्त आयताकार कक्ष है, जो कई छोटे-छोटे कक्षों में व्यवस्थित है। पूर्व की ओर से एक ढलवाँ रास्ता भवन की छत को जाता है, जहां पुनः एक वेदिका युक्त केन्द्रीय कक्ष है, जिसके दोनों पार्श्वों में दो स्तम्भ युक्त दालान बने हैं। इसका पिछला भाग एक ढोलाकार छत को वहन करता है, जिसका शीर्ष गुम्बद की लघु अनुकृतियों तथा शंक्वाकार पाषाणशिल्पों से सुसज्जित है। इस तरह की सम्पूर्ण व्यवस्था भवन को ज्यादा प्रभावपूर्ण बनाती हैं। ऊपरी मंजिल के पिछले हिस्से में जालीदार संकरा गलियारा है।

हरदेव-भवन की अलग अवस्थिति से ऐसा प्रतीत होता है कि यह राजकीय स्त्रियों के आवास हेतु बनाया गया था। मुख्य भवन के दोनों

पार्श्वों में बरामदा युक्त साधारण भवन है। इनमें से पूर्वी भाग दो मंजिला है। हरदेव-भवन स्थित उद्यान पूर्णतया निजी उपयोग हेतु था और स्त्री निवास के अनुकूल था। उद्यान की नहरों में लगे फव्वारे सीधे पाषाणकृत कमल के ऊपर स्थित है और किसी आकृति में ढले नहीं हैं। यह सुनिश्चित करना कठिन है कि यह मौलिक था अथवा परवर्ती।

(*vii*) किशन-भवन

परिसर के दक्षिणी भाग में स्थित इस महत्वपूर्ण भवन का 8.84 मी. ऊँचा मुखभाग पाँच उत्कृष्ट नक्काशी वाले मेहराबयुक्त द्वारों तथा सामने तेरह फव्वारों वाले ताल से सुसज्जित है। छत के किनारों से लटकती पाषाण कलियाँ एवं छत से आगे झांकती तीन अतिरिक्त अलंकृत छज्जे इस भवन को अति शोभायमान बना देते हैं।

मेहराब युक्त दरवाजे से भवन के अन्दर एक विशाल कक्ष में प्रवेश किया जाता है, जो बहुत कुछ गोपाल-भवन के मुख्य कक्ष के समरूप है। मेहराब अरबस्क शैली के अलंकरण से पूर्णत: सुसज्जित है। विशाल कक्ष की पिछली दीवार से झांकती एक दीर्घा है, जिसके सामने का भाग अत्यन्त सजीव अलंकरणों से परिपूर्ण है। इसका कमानीदार पालकीनुमा छद्म छत अपने नक्काशी के कारण विशेष आकर्षक है। कक्ष के कुछ भाग में पाषाण पट्टिकाओं पर मयूर व सुकोमल पुष्पपाद् अंकित किए गये हैं। विशाल कक्ष के दोनों पार्श्वों में दो-दो कमरे निर्मित हैं तथा पीछे एक लम्बा एवं ऊँचा गलियारा है, जो एक छोटे अर्द्ध दसभुजीय भवन तक पहुंचता है। किशन-भवन के दक्षिणी हिस्से की सपाट छत के ऊपर एक मेहराबयुक्त सुन्दर दीर्घा विद्यमान है जो भवन की उदग्र प्रस्तुति को प्रभावोत्पादक बना देती है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह दीर्घा बाद में भरतपुर के राजा बलवन्त सिंह (1826-53 ई.) द्वारा बनवाई गई थी।

(*viii*) जल-कुण्ड

किशन-भवन के पश्चिम में और इसके छत के बराबर की ऊँचाई पर एक विशाल जल-कुण्ड निर्मित है। यह विशाल मेहराबों के एक समुह पर आधारित है, जो उत्तर की ओर की दीवार से ढक दिए गये हैं। ऊँचाई पर इस जलाशय की स्थिति का एकमात्र कारण फव्वारों, जल-प्रपातों तथा झरनों का बेहतर सम्भव तरीके से संचालन करना था। इस हौज का आयतन 40.85×31.00×2.00 घनमीटर है। जल-कुण्ड के उदग्र दीवारों में कई बड़े छिद्रों की व्यवस्था है, जो परिसर में स्थित विभिन्न समूह के फव्वारों से सम्बन्धित है। इसमें जल भराव हेतु समीप ही चार कुएं स्थित हैं, जिनसे "रहट-प्रणाली" द्वारा उक्त जलाशय को भरा जाता था। इस जलाशय को भरने में उन दिनों लगभग एक सप्ताह का समय लग जाता रहा होगा। सभी फव्वारे एक साथ खोल देने की स्थिति में इस जलाशय का जल कुछ ही घंटे में खाली हो जाता है।

(*ix*) केशव-भवन

सामान्यतः बारादरी के नाम से ज्ञात यह 18×18 मी. वर्गाकार दीर्घा एक ओर से रूपसागर तथा दूसरी ओर से उद्यान को निहारता लालित्यपूर्ण मुद्रा में खड़ा है। एक वर्गाकार मंच पर आधारित इस इमारत के चारों कोनों पर अपेक्षाकृत अल्प ऊंचाई वाले चार अर्द्ध-अष्टकोणीय बुर्ज मौजूद है जो मुगल इमारतों के मीनारों की याद दिलाता है। सरोवर के पश्चिमी घाटों के मध्य स्वतंत्र खड़ा इस इमारत की अवस्थिति से ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तुकारों ने उक्त भवन के निर्माण हेतु घाटों के ही एक भाग का प्रयोग किया।

संतुलित ऊँचाई वाला एक तलीय केशव-भवन वस्तुतः एक खुली दीर्घा है जिसमें प्रत्येक ओर के पांच मेहराब इसकी रोशनी तथा सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। इमारत के अन्दरूनी भाग की व्यवस्था वर्षा ऋतु का

रूमानी अहसास पैदा करता है जो इस भवन का विशिष्ट पक्ष है। भवन के चारों ओर बनी मेहराबों की श्रृंखला इसका एक अन्दरूनी वर्गाकार भाग बनाती है, जो लगभग 1.91 मीटर चौड़ाई वाले नहर द्वारा अपने बाह्य भाग से अलग है। नहर के मध्य में बड़े फव्वारों की श्रृंखला के अतिरिक्त इसके पार्श्वों में छोटे-छोटे जेट लगे हैं। बाह्य रूप से ज्यादा प्रभावी न होते हुए भी अन्य भवनों के समान ही इसकी छत भी द्विसतही है। वस्तुतः इस व्यवस्था का उपयोग बादलों के गड़गड़ाहट के कृत्रिम प्रभाव को उत्पन्न करने के लिये किया गया था। निचला छत जो वस्तुतः एक नहर ही है, में पानी की संतुलित धार व उससे रगड़ खाते पाषाण गोलों द्वारा ऐसा ध्वनि भ्रम उत्पन्न किया जाता था। छत से निकलते नलों द्वारा मेहराबों के ऊपर से गिरने वाला पानी बारिश का पूरा वातावरण उत्पन्न कर देता था और फव्वारों से निकलने वाले रंग-बिरंगे जल से बना इन्द्रधनुष इस फंतासी को सम्पूर्णता प्रदान करता था।

(x) नन्द-भवन

45×26 वर्गमीटर के क्षेत्र में खड़ा यह शानदार आयताकार भवन वस्तुतः किसी प्रेक्षागृह की भाँति प्रतीत होता है। यह अपने लम्बाई के पार्श्वों में सात मेहराब युक्त द्वारों से खुला है एवं चौड़ाई के पार्श्वों में छोटे दीर्घाओं से युक्त है। इमारत के अंदर, बाहरी भुजाओं का अनुसरण करती हुई मेहराब की एक समानांतर श्रृंखला, इस विशाल कक्ष को बाह्य व आन्तरिक दो भागों में बांट देती है। कक्ष के दोनों पार्श्वों में एक दूसरे से जुड़े मेहराबदार दीर्घाओं की व्यवस्था है। संगमरमर की बनी तीन-तीन दीर्घाएँ विशाल कक्ष के सामने स्थित हैं जिनपर अर्द्धमूल्यवान पत्थरों से पच्चीकारी की गई है। ऐसी ही पच्चीकारी दीर्घाओं के सामने नीचे स्थित फव्वारों के ताल में की गई है। बहुत सम्भव है कि दीर्घाओं व ताल में प्रयुक्त सामग्री दिल्ली से लूट के रूप में लाई गई हो।

केन्द्रीय भाग की छत के भीतरी सतह में प्रयुक्त लकड़ी से ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तुकार इसे दिल्ली के दीवान-ए-खास का रूप देना चाहते थे। इस भाग की छत लकड़ी के धरणों पर ही आधारित थी जो सन् 1867 ई. में गिर गई। लोहे की शहतीरों द्वारा इसका पुर्ननिर्माण किया गया। विशाल चपटे छत के भार को ध्यान में रखते हुए विशाल स्तम्भों को खड़ा किया गया। इन स्तंभों की सतहों पर चित्रकारी की गई है। यद्यपि ये स्थानीय शैली के हैं तथापि कतिपय मुगल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सम्भवतया नन्द-भवन को भी दो मंजिला बनाये जाने की योजना थी, जो किन्हीं अज्ञात कारणों से पूरा नहीं किया जा सका। अन्य भवनों के समान ही इस भवन के ठीक सामने, एक कुशल शिल्प सजावट से युक्त तरणताल की व्यवस्था है।

(*xi*) सिंह-पोल

परिसर के तीन मुख्य प्रवेश द्वारों में उत्तर की ओर स्थित सिंह-पोल एक महत्वपूर्ण परन्तु अपूर्ण संरचना है। मेहराबयुक्त बाहर की ओर निकले मुख भाग वाला यह द्वार एक मेहराबदार गलियारा द्वारा अंदरूनी परिसर से जुड़ा है। प्रवेशद्वार का मेहराब अपने दोनों ओर स्थित द्वितलीय दीर्घा से पूर्णतः सामंजस्य रखता है एवं इन दीर्घाओं की उपस्थिति प्रवेशद्वार को सम्पूर्णता प्रदान करती है। प्रवेशद्वार के सम्पूर्ण भाग पर की गई नक्काशी असंतुलित व अनियंत्रित जान पड़ती है। स्थापत्य की दृष्टि से प्रवेश द्वार, भवन के बाद के बने प्रतीत होते हैं। द्वार के सामने के मेहराब पर घने बेल-बूटों की नक्काशी के मध्य दो सिंहों की उपस्थिति के कारण इस द्वार को सिंह-पोल का नाम दिया गया है। भगवान् श्री कृष्ण की गोपाल रूपी कृति तथा नाचते मयूर का भी अंकन हुआ है। भगवान् श्री गणेश दो स्त्री अनुचरों के मध्य प्रदर्शित हैं। तथापि ये कलाकृतियां कुछ प्रभावहीन सी जान पड़ती है। मेहराबदार गलियारों के पार्श्वों के इमारत भली-भांति बने हैं और संभवतः इनके निचले भाग में

बने भू-तलीय कक्ष का प्रयोग भंडारगृह या विश्राम के लिए होता रहा होगा।

दो अन्य प्रवेशद्वार, जो महाराजा बलवंतसिंह (1826-1853) द्वारा बनवाये गये, स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत साधारण हैं एवं उन पर उत्कीर्ण अरबस्क शैली के अलंकरण तुलनात्मक रूप से कम आकर्षक हैं।

(*xii*) केन्द्रीय उद्यान

परिसर के ठीक केन्द्र में स्थित उद्यान चारबाग पद्धति पर बना है, जो जोड़ का चिन्ह् बनाती चार नहरों व उनके कटान पर स्थित एक अष्टभुजीय ताल से परिपूर्ण हैं। प्रत्येक नहर अपने उद्गम पर एक लघु जलप्रपात से युक्त है। उद्यान का प्रत्येक खंड पाषाण पट्टिकाओं के बने रास्तों से घिरा है, जो ढलवे चढ़ाइयों व सीढ़ियों द्वारा मुख्य भवनों से जुड़े हैं। नहरों में मौजूद पंक्तिबद्ध फव्वारे भवनों के सौन्दर्य को और अधिक बढ़ा देते हैं। नन्दभवन तथा किशन-भवन के सामने का भाग यद्यपि कुछ हद तक उद्यान को अतिक्रमित करता प्रतीत होता है, तथापि उक्त व्यवस्था प्रकृति व स्थापत्य के बीच एक सुन्दर समन्वय की सृष्टि करता है।

उद्यान के वनस्पति सामान्य हैं। कतिपय पेड़ों की उपस्थिति कभी बागवानी की मुगल शैली के प्रचलन में होने का संकेत देती है। यद्यपि उद्यान की भारतीय परम्परा भी यहाँ जीवंत दिखती है।

(*xiii*) रूप-सागर

सामान्यत: पक्का तालाब के नाम से जाना जाने वाला यह तालाब, डीग की पुरानी संरचनाओं में से एक है। 82×82 वर्गमीटर के क्षेत्रफल

में नियोजित यह सरोवर 6 मीटर गहरा है। सरोवर की उल्लेखनीय विशिष्टता इसके वे आरामदायक चढ़ाई वाले घाट हैं, जो सरोवर के अन्दर तक गये लम्बे गलियारों व उनके अष्टभुजीय बुर्जों से कई खंडों में बंट जाते हैं। उक्त व्यवस्था स्थापत्य के शिल्पविधान व सौन्दर्य को कई गुना बढ़ा देता है। एक स्थानीय अनुश्रुति के अनुसार रूपसागर, बदनसिंह के भाई रूपसिंह द्वारा बनवाया गया था।

(*xiv*) गोपाल-सागर

आयताकार योजना में विन्यस्त, इस सरोवर के बारे में बताया जाता है कि यह रूपसागर के बराबर गहरा है। सन् 1866 तक गोपालसागर का चतुर्दिक बाँध मिट्टी का ही था और अभी भी इसका पश्चिमी बांध अपने मूल अवस्था में है, जिसके कारण इसे कच्चा तालाब भी कहा जाता है। सरोवर के उत्तरी व दक्षिणी भुजाओं पर आकर्षक घाट निर्मित हैं।

(ब) पुराना-महल

रूपसागर के दक्षिण में एवं डीग भवन परिसर से बिल्कुल लगता हुआ बदनसिंह द्वारा निर्मित पुराना महल बाह्य रूप से मजबूत और प्रभावोत्पादक है। आयताकार योजना में स्थित यह भवन आंतरिक रूप में दो आंगन व उसके चतुर्दिक विशाल व लघु कक्षों तथा गलियारों में व्यवस्थित है। चारित्रिक रूप से यद्यपि कम विशुद्ध, परन्तु स्थापत्य की दृष्टिकोण से यह अन्य भवनों से कहीं ज्यादा प्रभावी है। सामान्यत: दो मंजिला यह भवन स्थापत्य को प्रभावी बनाने हेतु कहीं-कहीं तीन मंजिला भी है। बाह्य सौन्दर्य की दृष्टि से इसके छतरियों व ढलवें छतों का संतुलित नियोजन नि:संदेह प्रशंसनीय है। इन भवनों में पर्णिल व कोणीय शीर्ष वाले, दोनों ही तरह के मेहराब प्रयुक्त हुये हैं।

इस महल से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं में कुछ धुंधली या लगभग मिट चुकी चित्रकारी का उल्लेख किया जा सकता है, जो पूर्वी आंगन से अन्दर की ओर जाने वाले प्रवेश के भीतरी भाग पर चित्रित है। प्रवेश कक्ष में बने चित्र, मुगल व राजपूत शैली के कलाकारों द्वारा बनाये गये प्रतीत होते हैं। इनमें लोकप्रिय अलंकरण विन्यास, घोड़े, हाथी के अतिरिक्त श्री कृष्ण की जीवन झांकी तथा कतिपय ब्राह्मण देवों का चित्रण किया गया है। ये सभी गचकारी की पृष्ठभूमि पर बने हैं। चित्रित आकृतियों में गहरे बाह्य रेखा, रंगों का साधारण नियोजन तथा लहराते वस्त्रों के रूप में गोलाई का प्रदर्शन हुआ है। चित्रण सामान्य है तथा सौन्दर्य की कमी का अहसास कराते हैं। पेड़-पौधों के चित्रण में चित्रकार पश्चिमी भारत के प्राक् मुगलकालीन शैली से प्रभावित लगता है। वस्त्रों व प्रदर्शित संरचनाओं में कतिपय मुगल प्रभाव का भी दर्शन होता है।

वर्तमान में यह भवन राज्य सरकार के अधीनस्थ कार्यालय हेतु प्रयुक्त हो रहा है और आंतरिक रूप से इसमें काफी बदलाव कर दिया गया है। तथापि यह भवन अपने स्थापत्य सौन्दर्य के कारण महत्वपूर्ण है।

(स) शीश-महल

शीश-महल का निर्माता सूरजमल का पुत्र नवलसिंह था, जिसने डीग के निकट रामबाग में एक अन्य महल का भी निर्माण करवाया। लगभग ध्वस्त हो चुका यह शीश-महल, पुराना महल के नजदीक स्थित है, जो रूपसागर से अपनी संबद्धता के कारण प्रभावी दृश्य उपस्थित करता है। इसके अन्य विशिष्टताओं में कतिपय स्तम्भों व मेहराबों को छोड़कर कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है। कभी इस इमारत से हमाम जुड़े थे और उनके सजावट हेतु उनमें काँच का प्रयोग हुआ था, जिसके कारण इस इमारत को शीश-महल के नाम से जाना गया।

(द) दुर्ग

रूप-सागर के पूर्व में शीश-महल से आगे एक विशाल दुर्ग स्थित है जो सूरजमल द्वारा युवराज की हैसियत से बनवाया गया था। आयताकार योजना में नियोजित इस किले की प्राचीर मिट्टी व पाषाण खण्डों से मिलकर बना है जो लगभग 20 मीटर से अधिक ऊँचा है। इसे मजबूती प्रदान करने हेतु बाह्य भाग में बारह बुर्जों की व्यवस्था है, जिनमें उत्तर-पश्चिम के एक सर्वाधिक विशाल बुर्ज को "लाखा-बुर्ज" के नाम से जाना जाता है। दीवार के बाह्य भाग में चिनाई किया गया था, जो अब कई जगह से नष्ट हो चुका है। एक चौड़ी तथा छिछली खाई किले को चारों ओर से घेरती है, जिसमें उत्तरी दरवाजे से जुड़े पुल द्वारा प्रवेश किया जा सकता है। कई बड़ी तोपें अभी भी दुर्ग के अंदर पड़ी हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि ये यहीं बनाये गए थे। किले के अन्दर प्रमुख इमारत के रूप में लगभग ध्वस्त हो चुका एक महल या हवेली है, जिसके कुछ भाग को मौलिक योजनानुसार पुनर्निर्मित किया गया है। इस महल की योजना पारम्परिक है और तद्नुसार एक मध्यस्थ आँगन के चतुर्दिक कई कमरों का विन्यास है। उत्तर में स्थित एक छोटा विभाजन निःसंदेह बाद का बदलाव है। लाल बलुआ पत्थरों तथा कोणीय शीर्ष वाले मेहराबों का प्रयोग इमारत की महत्वपूर्ण विशिष्टिता है।

दुर्ग के अन्य महत्वूपर्ण इमारतों में कतिपय भूमिगत कक्ष, सूरजमल के भाई सुल्तानसिंह की छतरी तथा एक मुगल मीरबख्शी मुहम्मद शफी का मकबरा है, जो 1783 ई० में अऊ में मारा गया था।

(इ) रक्षा-प्राचीर

डीग शहर को घेरे मे लेता यह ध्वंस्त विशाल रक्षा-प्राचीर लगभग 7.24 किलोमीटर की परिधि में है। इसकी दीवार इतनी ऊँची व विशाल

है कि मैंडेक नामक एक फ्रेंच जनरल ने पहली दृष्टि में इसकी तुलना पर्वतों की एक लम्बी श्रृंखला से की थी, जिसका प्रयोग शहर की घेरेबंदी हेतु किया गया था। इस प्राचीर को विशाल बुर्जों तथा शाहबुर्ज को छोड़कर शेष स्थानों पर एक चौड़ी खाई के द्वारा मजबूत स्थिति प्रदान की गई थी। इस प्राचीर मे अऊ, भूरा, पान्हौरी, शाहपुर, बाँधा, कांमा, देहली, जसोन्दी, गोवर्धन तथा रामचेला नाम के दस दरवाजे लगे थे। पान्होरी तथा शाहपुर दरवाजों के बीच की दीवार पत्थरों के चिनाई से बना है, जबकि शेष दीवार मिट्टी की ही है।

(फ) अन्य संरचनाएँ

अतीत के अवशेष के रूप में पूर्णतः या आँशिक रूप से ध्वस्त इमारतों का समूह, किसी भी अन्य उजड़ चुके राजधानी की तरह डीग में भी मौजूद हैं। उनमें से कुछ इमारतों का पुनर्निर्माण कर विभिन्न उद्देश्यों हेतु प्रयोग में लाया जाता रहा है। परिसर के बाहर स्थित राम–भवन, नन्द–भवन के उत्तर स्थित चन्द्र–भवन या छत्ता, रूपसिंह की छतरी, डीग के एक व्यापारी द्वारा बनाया गया लाला-कुण्ड तथा लक्ष्मणजी मंदिर प्रमुख अवशिष्ट संरचनाएँ हैं। इनमें से अंतिम पश्चिमी भारत के पुराने मंदिर स्थापत्य तथा उत्तर मुगल कालीन भवन स्थापत्य के मिश्रण का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है।

4. संग्रहालय

काल विशेष में स्थानीय शासकों के वैभवपूर्ण जीवन शैली को दर्शाये जाने के उद्देश्य से डीग भवन संग्रहालय का विकास किया गया है। यह संग्रहालय दो खंडों में क्रमशः गोपाल–भवन तथा किशन–भवन में मौजूद है। प्रदर्शित व संग्रहीत पुरावस्तुओं की कुल संख्या लगभग साढ़े पाँच सौ है। प्रमुख पुरावशेषों में तत्कालीन पहियेदार सोफे, विभिन्न प्रकार की कुर्सियाँ, विभिन्न प्रकार के टेबल व पलंग, कांच व पाषाण की सजावटी वस्तुएँ,

विविध प्रकार के पेंटिंग्स, छायाचित्र व इमारतों के योजना विन्यास प्रदर्शक, हाथी के पैरमय इत्रदान, चीनी मिट्टी के बने बर्तन, तांबे व कांसे के बड़े–बड़े भोजन पात्र, विभिन्न प्रकार के गुलदस्ते, विशाल दर्पण, झूले, सीप के बने कतिपय लघुकृतियाँ, विशाल राजसी पंखे, पीकदान, मौलिक ईरानी कालीन, मसलन व गद्‌दे तथा कतिपय पाषाण, काष्ठ व धातु की प्रतिमाएँ आदि सम्मिलित हैं। महाराजा द्वारा शिकार किए गये एक बाघिन व उसके दो बच्चों को उनके मौलिक शारीरिक आवरण में प्रदर्शित किया गया है।

संग्रहालय में कुल दस वीथिकाएँ हैं। इनके स्थापत्य का नियोजन भी कुछ इस तरह का है कि वे संग्रहालय के उद्‌देश्य को पूरा करते नजर आते हैं। यथा गोपाल–भवन में मौजूद भारतीय परम्परा का भोजन कक्ष वीथिका, जिसमें संगमरमर का बना अल्प ऊँचाई वाला पीठ लम्बोतरे वृत्त के आकार में कुछ इस प्रकार है कि मेहमानों के चारों ओर से पालथी मारकर बैठने तथा सेवकों द्वारा मध्य में आकर भोजन परोसे जाने का दृश्य स्वयंमेव सजीव हो उठता है।

पुरावस्तुओं का प्रदर्शन विभिन्न दीर्घाओं में उनकी प्रासंगिकता के साथ संदर्भित है। यथा महाराजा के शयन कक्ष में वही वस्तुएँ प्रदर्शित हैं जो महाराजाओं के काल में भी वहाँ मौजूद होते थे। इसी प्रकार महाराजा का शतरंज कक्ष में गद्‌दों व मसलनों का प्रदर्शन विशुद्ध पारम्परिक अंदाज़ में किया गया है।

किशन–भवन के सोफों, कुर्सियों व अन्य पुरावस्तुओं का प्रदर्शन किसी भी समकालीन मुगल दीवान–ए–खास के दृश्य को साकार करता प्रतीत होता है। सारतः प्रत्येक दीर्घा या कक्ष तथा उनमें प्रदर्शित पुरावस्तुओं के मध्य पुरी

तरह प्रासंगिकता विद्यमान है, जिससे पर्यटकों के समक्ष तत्कालीन शाही जीवनशैली पूरी तरह से जीवंत हो उठती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. सी. एम. विलियर्स स्टुअर्ट, "*गार्डेस ऑफ द ग्रेट मुगल्स*" (लंदन, 1913)

2. ई. बी. हवेल "*इंडियन आर्किटेक्चर*" (लंदन 1913)

3. एफ. एस. ग्रौस "*मथुरा: ए डिस्ट्रिक्ट मेमोएर*" (1883)

4. जी. एच. आर. टियुट्सन "दि *राजपुत पैलेसेस-द डेवलपमेंट आफ आर्किटेक्चरल स्टाइल 1450-1750*" (दिल्ली, 1987)

5. गोकुल चन्द्र दीक्षित, "*बृजेन्द्र वंश भास्कर*" (हिन्दी में) (आगरा विक्रम सम्वत, 1983)

6. जेम्स फर्ग्युसन "*हिस्ट्री ऑफ इंडियन एण्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चर*" (लंदन, 1876)।

7. जे. ए. डेवेनिश "*भवन्स ऑर गार्डन पैलेसेस ऑफ डिग*" (इलाहाबाद, 1903)

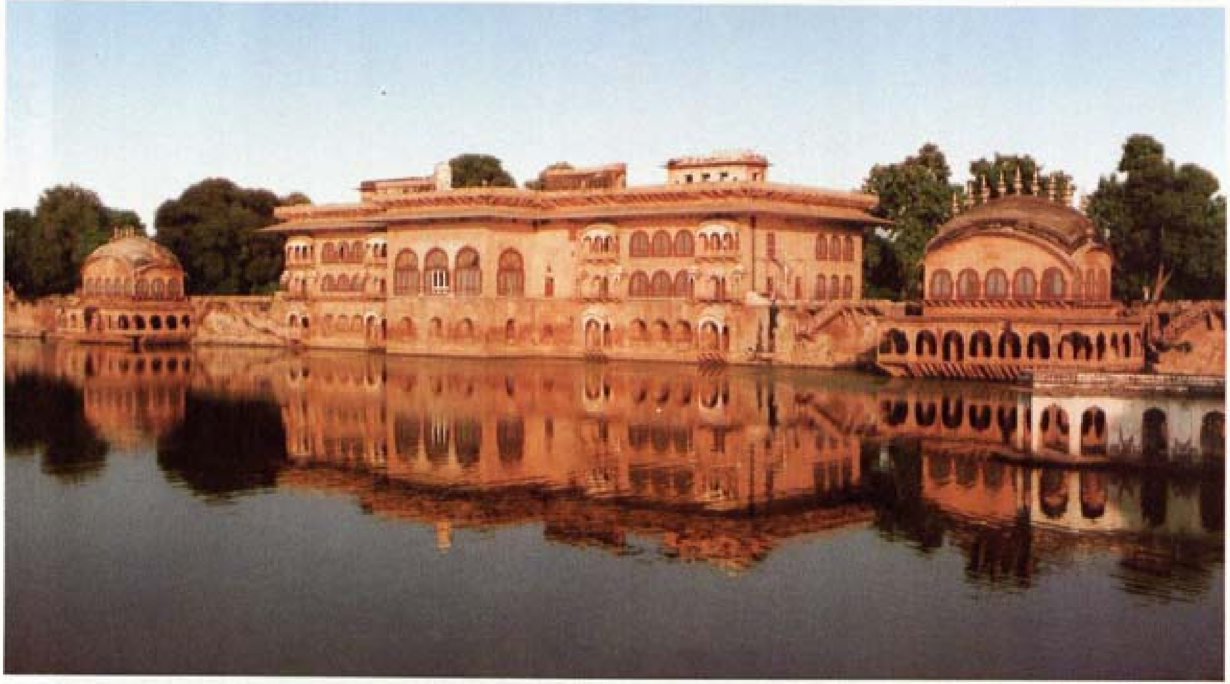
8. ज्वाला सहाय "*डिग, इट्स हिस्ट्री एंड पैलेसेस*" (लाहौर, 1902)

9. कुँअर नटवर सिंह "*महाराजा सूरजमल 1707-63*" (नई दिल्ली 1983)

10. कालिका रंजन कानूनगो, "*हिस्ट्री ऑफ दि जाट्स, I*" (कलकत्ता, 1925)

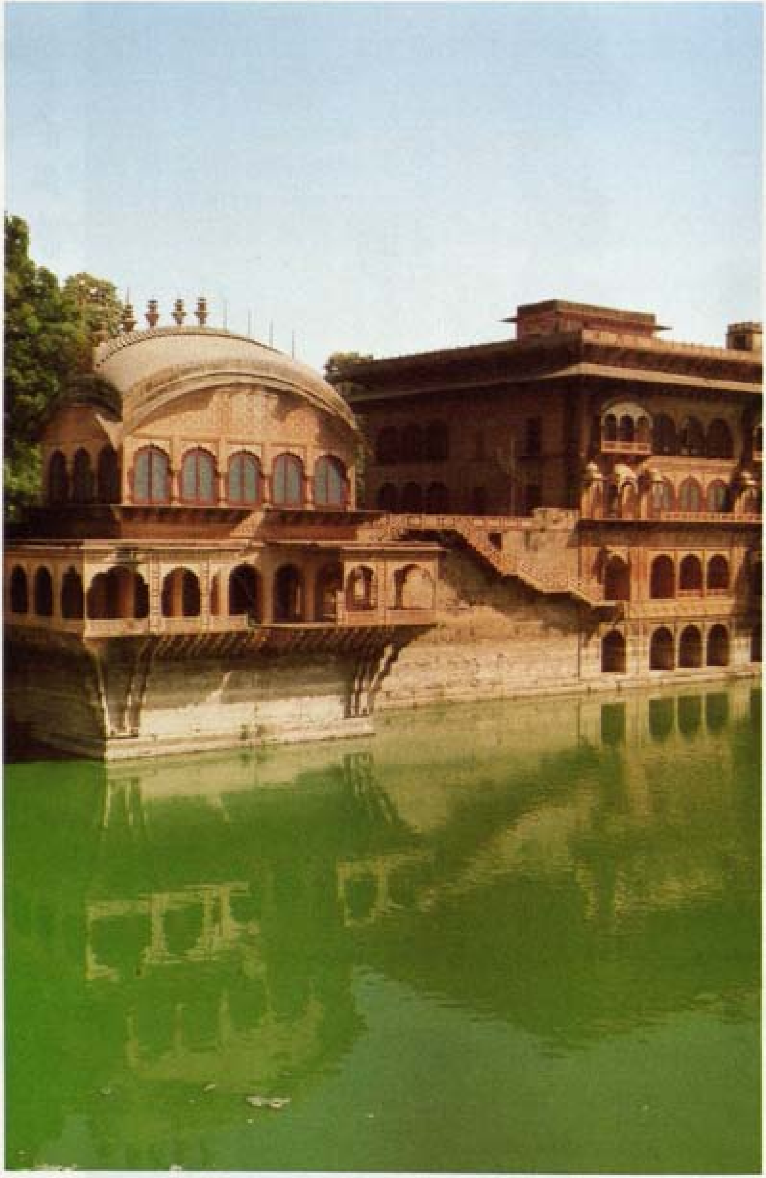
11. राजपाल सिंह, "*राइज ऑफ जाट पावर*" (नई दिल्ली, 1988)

12. रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी "*भरतपुर और अतीत के चिन्ह*" (हिन्दी में) (भरतपुर, 1956)

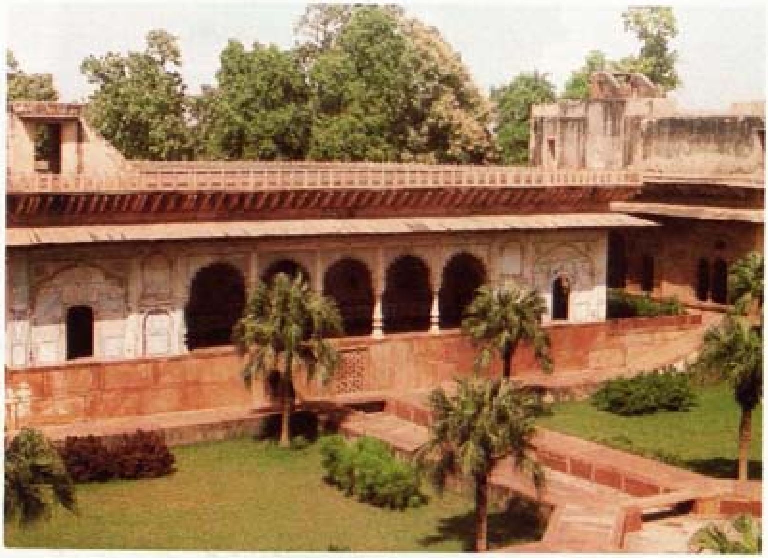


गोपाल सागर की पृष्ठभूमि में सावन एवं भादो दीर्घाओं के साथ गोपाल भवन, देखें. पृ० सं०-14

फलक 2



गोपाल भवन एवं सावन दीर्घा का नजदीकी दृश्य, देखें.
पृ० सं०-14 एवं 17



अ. सूरज भवन, देखें. पृ०सं०-18

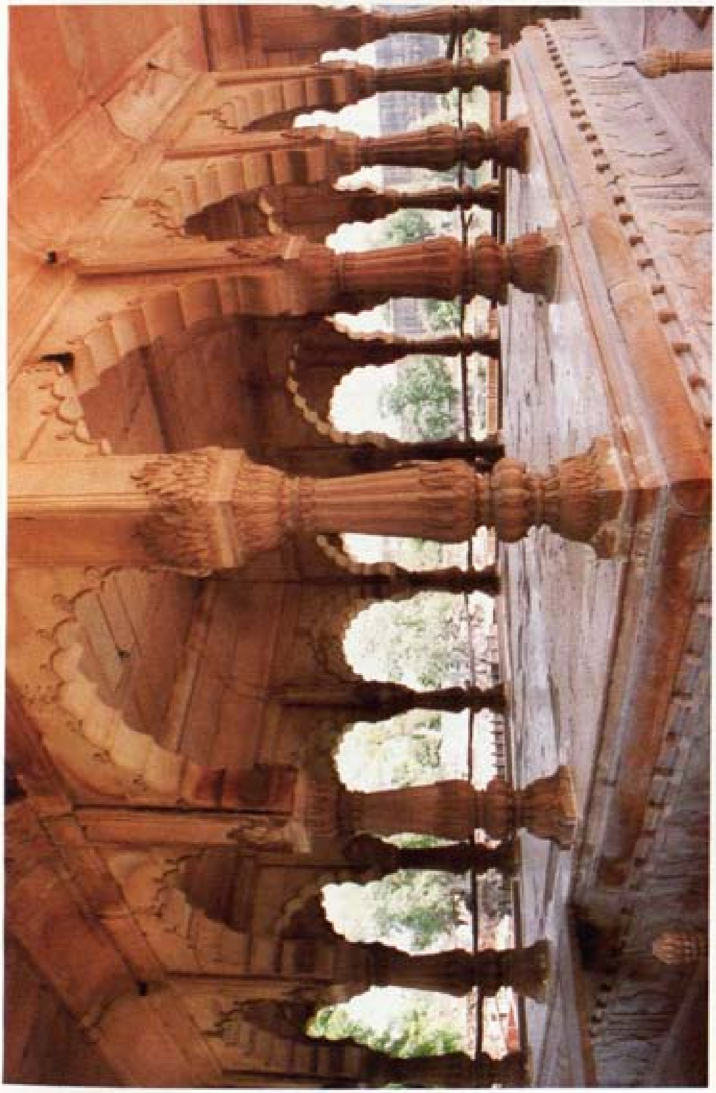


ब. हरदेव भवन का एक भाग देखें. पृ० सं०-19

फलक 4



रूप सागर की पृष्ठभूमि में केशव भवन तथा पुराना महल, देखें, पृ० सं०-22 एवं 26



केशव भवन का आंतरिक भाग, देखें, पृ० सं०-22



अ. पित्र-ड्युरा अलंकरण, सुरज भवन, देखें. पृ० सं०-18



ब. चित्रित स्तंभ, नंद भवन, देखें. पृ० सं०-23

फलक 7

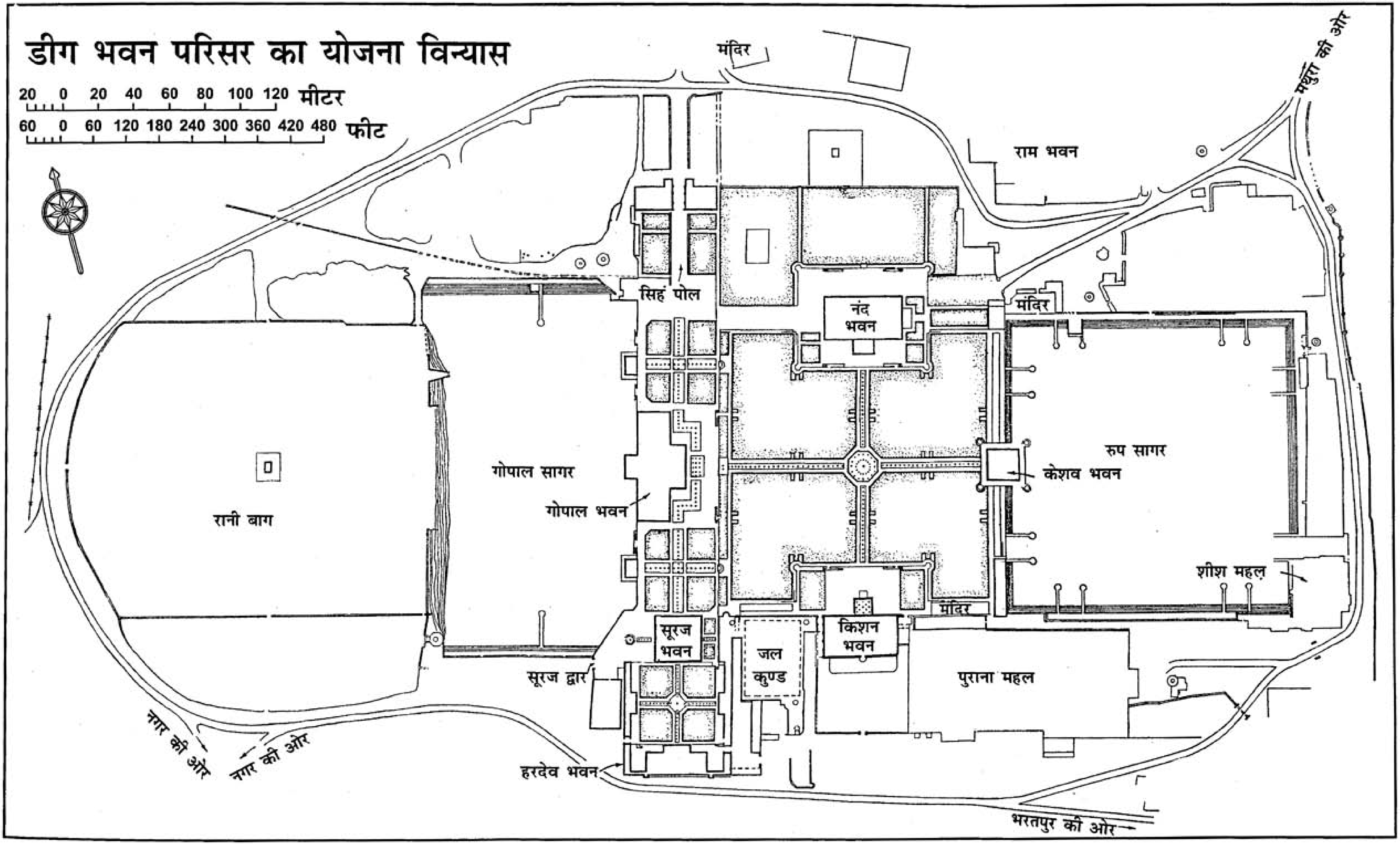


डीग किला: परकोटा एवं बुर्ज का सामान्य दृश्य, देखें, पृ० सं०-28

फलक 8



अलंकृत शीर्ष युक्त दीर्घाएँ, पुराना महल, देखें पृ० सं०–26


डीग भवन परिसर का योजना विन्यास
20 0 20 40 60 80 100 120 मीटर
60 0 60 120 180 240 300 360 420 480 फीट
मंदिर
मथुरा की ओर
राम भवन
सिंह पोल
नंद भवन
मंदिर
रानी बाग
गोपाल सागर
गोपाल भवन
रुप सागर
केशव भवन
शीश महल
मंदिर
सूरज भवन
किशन भवन
जल कुण्ड
सूरज द्वार
पुराना महल
नगर की ओर
नगर की ओर
हरदेव भवन
भरतपुर की ओर

